साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 45, सितम्बर(द्वितीय) , 2018

शौक की जिंदगी

डॉ दिग्विजय कुमार शर्मा

एक छोटे शहर में रतन नाम का एक व्यक्ति रहता था। उसके पास अपना घर नहीं था और वह किराये के मकान में रहता था। रतन अपना नया घर बनाने के लिए बहुत मेहनत करके पैसे जमा कर रहा था।

आखिर उसकी मेहनत रंग ले आयी और पन्द्रह साल में कठिन परिश्रम के बाद जो पैसे जमा हुए थे, उससे रतन ने एक सुन्दर और नया घर खरीद लिया। अब वह और उसका परिवार अपने नए घर में बहुत खुशी से रहने लगे थे।

उसके नए घर के आसपास जो पड़ोसी रहते थे, वह काफी अमीर थे। उसके पड़ोसी बहुत महँगे कपड़े पहनते थे, कई नौकर उनके यहाँ चौबीसो घंटे नौकरी करते थे, विलासिता और शौक की हर चीज उनके पास मौजूद थी।

अपने पड़ोसियों की बेहतरीन जिंदगी जीते देखकर रतन भी अब सोचने लगा था कि उसके पास में कोई भी शौक की चीज नहीं है। शौक की चीजों को खरीदकर अपने घर लाने की उसकी बहुत इच्छा होने लगी लेकिन अधिक पैसा न होने के कारण वह कुछ नहीं कर पा रहा था।

कुछ दिन पश्चात एक दिन उसके दरवाजे पर एक साधु आया जो भिक्षा मांग रहा था। उस समय रतन घर पर ही था। उसने साधु को कुछ वस्तुएं दान में दी तो साधु प्रसन्नहो गया और बोला, बच्चा “मैं तेरे दान से ख़ुश हूँ। तेरी कोई समस्या हो तो बता।”

तभी रतन ने अपनी सभी इच्छाओं को साधु को बता दिया।

विलासिता और शौक की चीजों की इच्छा के बारे में जानकार साधु बोला, “इसके लिए तो तू अपनी मेहनत को और बढ़ा दे तथा अधिक से अधिक पैसों की बचत कर, और उससे जो चाहें खरीद ले।”

लेकिन रतन को तो यही धुन लगी थी कि उसे अपने पड़ोसियों से ज्यादा चीजें बहुत जल्दी चाहिए। वह साधु से जिद करके कोई चमत्कार करने को कहने लगा। कि महाराज कोई ऐसा उपाय बताओ या कोई ऐसी दिव्य वस्तु दे दो जो मेरे सभी शौक पूरे हो जाय और मैं विलासता की जिंदगी जी सकूँ।

कुछ देर सोचकर एक हथौड़ी देते हुए साधु बोला, “अगर तू यही चाहता है तो यह हथौड़ी ले। साथ ही मैं तुझे एक मंत्र बता रहा हूँ। जब भी तुझे किसी शौक की चीज की जरुरत हो तो अपने घर की किसी भी दीवार पर तेज़ी से एक हथौड़ी मारना और फिर इस मंत्र को बोल देना। तभी हथौड़ी मारने वाली जगह से उस शौक की चीज को खरीदने लायक पैसे निकल आएंगे। लेकिन ध्यान रखना कि इससे तू केवल अपने शौक की चीजों को प्राप्त कर सकता है, अपनी जरुरत की चीजों को नहीं।”

इतना कहकर साधु चला गया। रतन उस हथौड़ी और मंत्र को पाकर बहुत खुश था।

वह तुरंत घर के अंदर गया और अपने मन में महँगे कपड़ों के बारे में सोचकर एक दीवार पर बहुत तेज़ी से हथौड़ी मारी और मंत्र पढ़ दिया। तुरंत उस दीवार में से पैसे निकल आये। रतन बहुत खुश हुआ और तुरंत बाजार जाकर महँगे कपड़े खरीद लाया।

अब तो वह हर रोज ऐसा करने लगा। अब वह रोज अपने शौक की किसी चीज के बारे में सोचता और दीवार में हथौड़ी मारकर मंत्र पढ़ देता, तभी तुरंत पैसे निकल आते।

कुछ ही महीनों में रतन के घर अपने पड़ोसियों के जैसी महँगी और शौक की बहुत सी चीजें हो गयीं। अनेकों नौकर उसके यहाँ अब दिन रात काम करते थे तथा उसकी

और उसके परिवार की सेवा करते थे। अगले कुछ महीनों में ही कमल अपने पड़ोसियों से शौक की चीजों को खरीदने के मामले में बहुत आगे निकल गया।

हथौड़ी को प्राप्त किये हुए एक साल हो चुका था। एक दिन जब रतन अपने परिवार के साथ अपने घर में बैठा हुआ था और अपनी सभी शौक की वस्तुओं को देख रहा था तभी उसकी नजर अपने घर पर गयी और वह चौंक गया और बोला, "अरे यह क्या हो गया मेरे घर को! सभी तरफ हर दीवार में केवल छेद ही छेद नजर आ रहे हैं। यह इतना बदसूरत कैसे हो गया?"

तभी पास खड़ी उसकी पत्नी बोली, "आप ही तो पिछले एक साल से इन दीवारों में हथौड़ी मारकर छेद कर रहे हो। मैंने आपको बहुत बार मना भी किया था लेकिन आप माने ही नहीं, अब इस घर में हर जगह छेद है।"

लेकिन रतन तो अपने सपनों की दुनिया में खोया हुआ था। वह बोला, "कोई बात नहीं! मैं एक और हथौड़ी मारूँगा और एक नए घर के लायक पैसे निकल आएंगे।"

इतना कहकर रतन पूरे घर में ऐसी जगह को खोजने लगा जहाँ कोई भी छेद न हुआ हो। काफी देर के बाद उसे एक दीवार पर सबसे नीचे केवल एक जगह ऐसी मिली जहाँ कोई छेद न था। कमल ने बिना कुछ ध्यान दिए केवल एक सुन्दर घर के बारे में सोचा और तेजी से हथौड़ी मार दी।

लेकिन यह क्या! एक भी पैसा नहीं निकला बल्कि पूरा घर भरभरा कर नीचे गिर गया और सभी विलासिता की वस्तुएं, उसके नौकर और पूरा परिवार मलबे के नीचे दब गए। लेकिन कमल बच गया क्योंकि उसने मकान को गिरते देख खुद को लोहे की मेज के नीचे छिपा लिया था।

सब कुछ खत्म हो चुका था। रतन चीख चीख कर रो रहा था और उस साधु को बार बार धोखेबाज कह रहा था क्योकि अबकी बार हथौड़ी मारने पर एक भी पैसा नहीं निकला था।

तभी साधु की कही गई बात एक बार फिर उसके कानों में गूंज गई जो हथौड़ी देते समय कही गयी थी- “ध्यान रखना कि इससे तू केवल अपने शौक की चीजों को प्राप्त कर सकता है, अपनी जरुरत की चीजों को नहीं।”

और सच है कि घर उसका शौक नहीं बल्कि जरुरत था जिसको बनाने के लिए उसके पन्द्रह सालों तक बहुत मेहनत की थी। लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता था। अब कुछ नहीं बचा था और सब कुछ ख़त्म हो चुका था।

जैसा रतन ने अपने घर के साथ किया, वैसा ही बहुत से लोग अपने रिश्तों के साथ करते हैं।

यदि हम रतन के घर को अपने द्वारा बहुत मेहनत से बनाये गए प्यारे रिश्तों जैसा मानें तो आज की दुनिया में बहुत से लोग अपने इन खुशहाल रिश्तों को जिनमें सच्ची खुशिया छिपी होती हैं, कुछ महँगी और शौक की चीजों को एकत्रित करने के चक्कर में अपने प्यार और समय की गरमाहट नहीं दे पाते और लगातार उन सुन्दर रिश्तों को हम “समय नहीं है” नाम की हथौड़ी से बार बार और लगातार प्रहार करते रहते हैं। और एक दिन ऐसा आता है जब समय न देने की वजह से सभी प्यारे रिश्ते, यहाँ तक कि मजबूत पारिवारिक रिश्ते भी भरभरा कर टूट जाते हैं और बचता है तो केवल आपके शौक की चीजों का मलबा जो आपके ही क्या किसी के भी काम का नहीं होता।

इसीलिए जीवन में रिश्ते बड़े अनमोल होते हैं। कोई भी इनकी जगह नहीं भर सकता क्योंकि हमारी सच्ची खुशियां हमारे पारिवारिक और दूसरे प्यारे रिश्तों में छिपी होती हैं। कोई भी व्यक्ति दिन भर कमाता है, किसके लिए? कोई भी व्यक्ति सुबह से शाम तक मेहनत करता है, किसके लिए?

कोई भी व्यक्ति शौक और विलासिता की चीजें घर में इकट्ठी करता है, किसके लिए? इसका सीधा सा उत्तर है- अपने और अपने प्यारे रिश्तों के लिए। लेकिन इतनी

मेहनत से बनाये गए इन रिश्तों को आपके द्वारा दिए गए समय की भी बहुत जरुरत होती है।

यदि हम अपने माथे पर रिश्तों के लिए “समय नहीं है” का बोर्ड लगाकर अपना पूरा समय घर में चीजों को एकत्रित करने में लगा दें तो जाहिर है कि हम अपने प्यारे रिश्तों पर हर दिन प्रहार कर रहे हैं और उनमे छेद किये जा रहे हैं।

इसका परिणाम बहुत दुखद होता है और जब हमें इसका पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है और बचता है तो केवल मलबा, आपके द्वारा जिंदगी भर इकठ्ठा किया हुआ मलबा।

महँगी और शौक की चीजें इकठ्ठा करना गलत नहीं है लेकिन उन चीजों की कीमत यदि आपके रिश्तें हो, यह गलत है। इस दुनिया के हर इंसान के लिए उसके रिश्ते अनमोल होते हैं, हर इंसानी रिश्ता बहुत अनमोल होता है । इसीलिए हम और आप ध्यान रखिये, हम सभी एक इंसान हैं। इंसान की अहमियत समझें और साथ दें।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें